MOHANLAL SUKHADIA UNIVERSITY UDAIPUR-313039

SYLLABUS FOR SCREENING TEST FOR THE POST OF ASSISTANT PROFESSOR

Subject : JAINOLOGY AND PRAKRIT

Note: There shall be 100 questions with multiple Choices carrying 100 marks to be completed in 3 hrs duration

इकाई–I : प्राकृत भाषा का इतिहास : उत्पत्ति एवं विकास

वैदिक (छान्दस्) साहित्य में प्राकृत भाषा के तत्त्व
प्राकृत भाषा का विकास
प्रथमयुगीन प्राकृत
मध्ययुगीन प्राकृत
तृतीययुगीन प्राकृत–अपभ्रंश
आधुनिक भारतीय भाषाओं के प्राकृतों का योगदान

इकाई– II : विभिन्न प्राकृतों की विशेषताएं

मागधी
अर्धमागधी
शौरसेनी
महाराष्ट्री
पैशाची
अपभ्रंश

इकाई– III : अर्धमागधी एवं शौरसेनी आगम साहित्य का इतिहास

इकाई– IV : प्राकृत काव्य साहित्य का इतिहास

महाकाव्य
चरितकाव्य
खण्डकाव्य
चम्पू
कथासाहित्य

इकाई– V : नाटक एवं सट्टक साहित्य का इतिहास

इकाई– VI : प्राकृत शिलालेखीय साहित्य का इतिहास

(सम्राट् अशोक के 14 गिरनार शिलालेख एवं सम्राट् खारवेल के हाथीगुफा शिलालेख का विस्तृत अध्ययन)

इकाई– VII : प्राकृत लाक्षणिक साहित्य का इतिहास

अलंकार
वृत्त (छन्द)
कोष

इकाई– VIII : प्राकृत व्याकरण एवं भाषाविज्ञान

(कारक, संधि, क्रिया, तद्धित, कृदन्त, समास एवं रूपतत्त्व)
(स्वर, व्यंजन, अनुस्वार, अनुनासिक, विसर्ग, ध्वनि–परिवर्तन–स्वर–परिवर्तन, व्यंजन–परिवर्तन एवं यश्रुति)

इकाई– IX : प्राकृत मूल ग्रन्थ अध्ययन

आचारांग (प्रथम श्रुतस्कंध : प्रथम अध्ययन–सत्थपरिण्णा
द्वितीय अध्ययन–लोगविजय)
उत्तराध्ययन (नवां अध्ययन–नमिपवज्जा,
तेबीसवां अध्ययन–केषी–गौतम)
प्रवचनसार (कुन्दकुन्दाचार्य) : (प्रथम ज्ञानाधिकार)
सन्मतितर्कप्रकरण (सिद्धसेन)
द्रव्य संग्रह (नेमिचन्द्र)

इकाई– X : प्राकृत मूल ग्रन्थ अध्ययन

मृच्छकटिकं (शूद्रक) केवल प्राकृत–भाग
सेतुबन्ध (प्रवरसेन) प्रथम आष्वास
कुवलयमालाकहा (उद्योतनसूरि) अनुच्छेद 1 से 12
कर्पूरमंजरी (राजषेखर)
णायकुमारचरिउ (पुष्पदंत)

इकाई– XI :

भगवान् ऋषभदेव, पार्श्वनाथ एवं महावीर का जीवन
जैन सम्प्रदाय एवं भेद – दिगम्बर एवं श्वेताम्बर, प्राकृत आगम साहित्य।
आचार्य कुन्दकुन्द, उमास्वाति (मि) एवं हरिभद्रसूरि का व्यक्तित्त्व एवं रचनाएँ।
जैन शिक्षा के प्रमुख केन्द्र – श्रवणबेलगोला, जैसलमेर, अहमदाबाद एवं वाराणसी।

इकाई– XII :

पाँच अणुव्रत एवं महाव्रत – अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह।
षट्द्रव्य एवं सात तत्त्व।
रत्नत्रय–सम्यग्दर्शन–ज्ञान–चारित्र।
ज्ञान के पाँच प्रकार – मति, श्रुति (श्रुत), अवधि, मनःपर्यय एवं केवलज्ञान

इकाई– XIII :

जैन शिल्प एवं स्थापत्य – एलोरा की गुफाएँ, खजुराहो एवं माउण्ट आबू के जैन मंदिर।
जैन प्रतिमा विज्ञान – मथुरा एवं श्रवणबेलगोला से प्राप्त प्रतिमाएँ।
जैनविद्या में नारी की स्थिति।
समाज पर जैनविद्या का प्रभाव – शाकाहार एवं चार प्रकार के दान।
जैनविद्या एवं पारिस्थितिकीय चिन्तन।